International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 261-272

भारत–जापान संबंधों के नवीन आयाम

डॉ. गुरूदत्त स्वामी*

सार

भारत और जापान एशिया महाद्वीप के महत्वपूर्ण राष्ट्र है। इन दोनों में विदेशनीतिक संबंध सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप के साथ सम्पूर्ण विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करते है। भारत–जापान मुख्य रूप से सांस्कृतिक–आर्थिक हितों के आधार पर जुड़े हुए हैं। विश्व महाशक्तियों द्वारा एशिया महाद्वीप में अपने वर्चस्व स्थापित करने की नीति भी इन दोनों देशों के आपसी संबंधों को प्रभावित करती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बनता जा रहा है इसलिए पूंजीवादी व तकनीकी रूप से सम्पन्न राष्ट्र भारत में पूंजी निवेश कर रहे हैं। जापान भी तकनीकी रूप से सम्पन्न राष्ट्र है इसलिए वह भारत के साथ आर्थिक संबंधों को मजबूत कर रहा है। भारत में भी इससे रोजगार के विकल्प खुल रहे हैं। इस प्रकार भारत–जापान संबंधों के अध्ययन से पता चलता है कि इससे एशिया महाद्वीप विश्व राजनीति का केन्द्र बिन्दू बनता जा रहा है।

शब्दकोशः *सांस्कृतिक–आर्थिक हित, विश्व महाशक्तियां, उपभोक्ता बाजार, पूंजी निवेश, विश्व राजनीति।*

प्रस्तावना

परम्परागत भारत–जापान संबंध धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सैनिक व राजनीतिक क्षेत्र में थे। ये संबंध पांचवीं व छठी शताब्दी से शुरू होकर 1980 तक इन्हीं आधारों पर चलते रहे। इन क्षेत्रों में संबंध तो चलते रहे, परन्तु उतार चढ़ाव आते रहे। संबंधों में निरन्तरता भी नहीं रही कभी संबंध मैत्री पूर्ण हो गये तो कभी सामान्य रूप में चलते रहे। लेकिन संबंध टूटे नहीं।

भारत–जापान संबंधों का नया दौर 1980 के बाद शुरू होता है। 1980 से वर्तमान तक संबंधों में पुराने क्षेत्र कम महत्वपूर्ण हो गये व नये आयामों के आधार पर संबंधों का पुनः निर्धारण होने लगा है। पूरे विश्व में ही परिवर्तन का दौर आया है व 1990 के बाद अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भी व्यापक परिवर्तन आया है। भारत–जापान संबंध भी नये स्वरूप में विकसित हो रहे है उदारीकरण, वैश्वीकरण व आर्थिक गतिविधियों का भारत–जापान संबंधों पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। भारत व जापान दोनों ने ही एक दूसरे को प्रभावित किया है। भारत 1947 के बाद से अब तक विभिन्न समस्याओं का मुकाबला करता हुआ वर्तमान स्थिति में पहुंचा है। साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद की मार से पीड़ित भारत के सामने आधारभूत संरचना के विकास की चुनौती थी। स्वतन्त्र भारत में एकता व अखण्डता कायम करने की आवश्यकता थी। भाषावाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद व जातिवाद जैसी समस्याओं से मुकाबला करने की समस्या थी। स्वतन्त्र भारत में इन विभिन्न समस्याओं का भारतीयों ने डटकर मुकाबला किया है तथा तीव्र आर्थिक विकास किया है, यह जापान के लिए उदाहरण है अतः जापान ने भारत के साथ नये सन्दर्भों में नवीन संबंध कायम किये हैं। इसी प्रकार जापान ने भी जो अद्भूत विकास किया है वह भारत के लिए ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। 1945 से पहले जापान सैनिक तानाशाही से संचालित होने वाला उत्पीड़क देश था, जिसने मंचुरिया सहित कई पूर्वी व दक्षिणी पूर्वी एशिया के क्षेत्रों पर

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, खेरवाड़ा, उदयपुर, राजस्थान।

अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया था इस रूप में जापान की छवि उपनिवेशवादी देश के रूप में थी। 1945 में जापान पर परमाणु शक्ति के प्रयोग से भयंकर संकट आया। जापान शक्ति विहीन, कमजोर, दूसरों पर आश्रित रहने वाला व आर्थिक रूप से असंगठित देश बन गया था, परन्तु शीघ्र ही जापान उठ बैठा, उसने अपनी मंजिल निर्धारित की व उस तक पहुंचने के लिए जी जान से लग गया। अल्प अवधि में ही उसने तीव्र आर्थिक विकास किया व आर्थिक महाशक्ति बन गया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को अपने पक्ष में किया। राजनीतिक रूप से तो नहीं, परन्तु आर्थिक रूप से महाशक्ति तक पहुंचने के लिए जापान ने बहुत प्रयास किये। जापान का आर्थिक विकास भारत के लिए प्रेरणा स्रोत तथा एक दूसरे को प्रेरित करने, प्रेरणा देने व प्रभावित करने के कारण आपसी संबंध कई नवीन आधारों पर निर्धारित होने लगे हैं। भारत–जापान संबंधों में प्रमुख रूप से निम्नलिखित नवीन आयाम विकसित हुए हैं –

- व्यापार
- विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
- संयुक्त उद्यम
- सहायता–अनुदान
- ओ.डी.ए.
- परमाणु शक्ति
- भूकम्प और सुनामी

व्यापार

भारत की स्वतन्त्रता के बाद भारत व जापान के बीच व्यापार बहुत धीमी गति में रहा। व्यापारिक संबंधों की शुरूआत व्यापारियों के प्रतिनिधि मण्डलों व पत्रकारों के एक दूसरे देशों में व्यापारिक दौरों व व्यापार वार्ताओं से शुरूआत हुयी। भारत–जापान व्यापार 1958 की भारत जापान संधि के अनुसार संचार होता है। भारत में औद्योगिकरण व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया देर से शुरू हुयी। जापान ने भारत को तैयार कपड़े निर्यात करने से व्यापार शुरू किया, 1970 के बाद लौहा व स्टील से बनी हुई वस्तुओं मशीनरी आदि का निर्यात शुरू किया। भारत–जापान के बीच व्यापार का संतुलन जापान के पक्ष में रहा। 1960 के बाद से भारत जापान को खनिज पदार्थ बेचने वाला प्रमुख देश है। भारत ने भारी उद्योग पर सर्वाधिक बल दिया, बाद में कृषि उपभोक्ता वस्तुओं और आधारभूत संरचना के विकास पर बल दिया, जबकि जापान ने उच्च विकास दर, वस्तुओं की कीमतें कम करने और जापानी वस्तुओं की विश्व बाजार में गुणवत्ता साबित करने पर सर्वाधिक जोर दिया।[1] शुरू में व्यापार परम्परागत रूप में ही रहा धीरे–धीरे जापान भारत का प्रमुख व्यापारिक हिस्सेदार बन गया। जापान के भारत को बढ़ते निर्यात का इस बात से ही पता लगाया जा सकता है कि 1960–61 में जापान का भारत के साथ व्यापार 54 प्रतिशत बढ़ा था, जबकि 1976–77 में यह 11 प्रतिशत बढ़ गया।[2]1980 के दशक में जापान के भारत में निर्यात में 20 प्रतिशत वृद्धि हो रही थी, जबकि जापान द्वारा भारत से आयात में 1.2 ही प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही थी।[3] भारत जापान को प्रमुख रूप से कच्चा माल निर्यात करता है। भारत जिन क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ा रहा है वे है – तैयार खाना, तैयार वस्त्र, इंजीनियरिंग का सामान, कृषि उत्पाद, रसायन, सुखे फल आदि मुख्य हैं। भारत अब कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर तैयार करने में एक प्रमुख देश बन गया है। वर्तमान में जापान में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत का स्थान 27वां है। भारत कुल आयात का 2.35 प्रतिशत तथा कुल निर्यात का 1.46 प्रतिशत जापान के साथ कर रहा है।

इसी प्रकार भारत का जापान के साथ व्यापार 2003–04 में 4.37 बिलियन डॉलर था जो 2021–22 में बढ़कर 20.57 बिलियन डॉलर हो गया है। इस प्रकार भारत–जापान के आपसी संबंधों में सुधार का महत्वपूर्ण कारण आपसी व्यापारिक संबंध भी है।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

भारत की आर्थिक ताकत बढ़ाने के साथ इसने अपनी विदेश नीति को वैश्विक प्रभाव के लिए बढ़ाया है। भारत जापान संबंध परिवर्तन के दौर से गुजरे हैं तथा अब दोनों में रणनीति व वैश्विक साझेदारी उत्पन्न की जा रही है। जापानी बैंकों द्वारा किये गये भारत में एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि जापानी उद्योगपतियों ने भारत में यह अनुभव किया है कि लम्बी अवधि के जापानी निवेश के लिए भारत सबसे अधिक सुरक्षा देने वाली जगह है। जापान का सर्वाधिक निवेश चीन में है। भारत के लिए सर्वाधिक आवश्यकता मूलभूत संरचना के विकास की है। वर्तमान में भारत के तीव्र आर्थिक विकास पर जापान की नजर है। वर्तमान में जापान भारत में छठा सबसे बड़ा निवेशक राष्ट्र है। 2000 से दिसंबर 2022 तक भार में 38.30 मिलियन डॉलर का जापानी निवेश हुआ है। अगले 5 साल में जापान ने भारत में 5 ट्रिलियन डॉलर निवेश का प्लान बनाया है।

जापान ने भारत में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए मुम्बई में एक बिजनिश सेन्टर स्थापित किया।[4] जापान की कम्पनियों ने संयुक्त उपक्रमों मे निवेश का उत्साह दिखाया है। जापान ने भारतीय कम्पनियों के माध्यम से पैसा लगाया है, उसमें प्रमुख कम्पनियां मारूति उद्योग, एसकॉर्ट, यामाहा मोटर, सिनोयल बी.पी.एल. प्राइवेट लिमिटेड, एसकॉर्ट, वालसपून प्रॉडेक्टस, वालसपून टेल्को कंट्रेक्सन एक्यूपमेण्ट, टेली कम्युनिकेशन व किर्लोस्वर मोटर्स आदि। जापान की जिन कम्पनियों में निवेश कर रहा है उनकी संख्या बढ़ रही है। मुख्य रूप से ऑटोमोबाइल्स क्षेत्र में कम्पनियों की संख्या बढ़ रही है। होण्डा कम्पनी ने राजस्थान में नई यूनिट शुरू की है। मारूति सुजोकी ने हरियाणा में नई फैक्ट्री लगायी है। टोयटो ने नई कार फैक्ट्री लगायी है। मुजुहा फाइनेंसियल ग्रुप ने भारतीय एस.बी.आई. ग्रुप से समझौता किया है। तोषिबा कॉरपोरेशन ने संयुक्त उपक्रम में पूंजी लगायी है। भारत व जापान ने जनवरी 2007 में व्यापक आर्थिक सहयोग का समझौता किया है। इस समझौते से भारत के जापान के साथ सीमा शुल्क को शून्य करने का प्रस्ताव था, जिसके लिए जापान तैयार नहीं है। अभी इस पर पूर्ण निर्णय नहीं हो पाया है। व्यापार व निवेश सर्वाधिक तभी बढ़ता है जब सीमा शुल्क में छूट दी जाय। वस्तुओं के व्यापार के साथ बहुत से अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग की आवश्यकता है।

सरकारी विकास सहायता

आर्थिक संबंधों का एक पक्ष जापान द्वारा भारत को आर्थिक सहायता देता है। 1957 के बाद जापान भारत का सबसे बड़ा दाता है। 1958 से जापान ने भारत को ये नये ऋण उपलब्ध कराना शुरू कर दिया थ्ज्ञा। 1952 में ओ.डी.ए. को शुरू करने के बाद यह बड़ी ऋण की मात्रा थी, जो भारत को दी गयी।

जापान का ऋण मुख्यरूप से निम्नलिखित क्षेत्रो के लिए दिया गया –

- विद्युत और यातायात में मूलभूत सुविधा के विकास के लिए
- कृषि और ग्रामीण विकास के लिए
- वृक्षारोपण द्वारा पर्यावरण संरक्षण और पानी की गुणवत्ता में सुधार के लिए
- चिकित्सा व स्वास्थ्य की देखभाल के लिए

जापान एक निश्चित अन्तराल के बाद जापान द्वारा दिये गये ऋण की भूमिका का मूल्यांकन करता है। वर्तमान जापान की भारत के प्रति ऋण नीति, इस क्षेत्र व विश्व में भारत की उभरती हुयी आर्थिक शक्ति की पहचान है। जापान द्वारा भारत को ऋण देने प्रमुख उद्देश्य है –

- अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भारत बढ़ती हुई शक्ति की प्रतिबद्धता और भारत को एशिया के संरचनात्मक विकास में सहायता देने के लिए समृद्ध करना।
- दक्षिणी एशिया में भारत द्वारा प्रभावी भूमिका निभाने की क्षमता के कारण जापान अपनी व एशिया की सुरक्षा के लिए नजदीकी द्विपक्षीय संबंधों को विकसित करना
- भारत की गरीबी हटाने के लिए रणनीति बनाना

भारत को येन ऋण जापान इण्टरनेशनल कॉरपोरेशन देता है जबकि सहायता अनुदान व तकनीकी सहयोग जापान इण्टरनेशनल कॉरपोरेशन एजेन्सी देती है। 2003 में जापान के सोफ्ट ऋण व सहायता को भारत सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता है। यह दोनों देशों के बीच बढ़ते सहयोग का प्रतीक हैं। जापान ने मुख्य रूप से निम्नलिखित पर जोर दिया है –

- स्वास्थ्य व सीवरेज क्षेत्र में सुधार के लिए व स्थानीय विकास के लिए
- पर्यटन का विकास व रोजगार सृजित करना तथा विनाश को रोकना
- भारत में पर्यावरण प्रदूषण को रोकना
- पानी की आपूर्ति में सुधार करना, शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना
- वृक्षारोपण कार्य करना
- ऊर्जा पुनः उत्पन्न करना व ऊर्जा का उत्पादन करना
- शहरी पर्यावरण सुधार कार्यक्रम तथा
- नदियों व झीलों का पर्यावरण संरक्षण करना

जापान द्वारा भारत को ऋण देने का उद्देश्य, भारत व जापान में आपसी समझ विकसित करना मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अधिक से अधिक सहयोग जरूरी है। तकनीक में ज्यादा सहयोगी आवश्यकता है। जापान तभी मानव संसाधन विकास में अधिक सहयोग करेगा, युवा कार्यक्रमों को बढ़ायेगा व भारत तथा जापान में बौद्धिक सहयोग के कार्यक्रम हो सकेंगे।[5]

जापान की भारत को अधिकांश सहायता आधारभूत संरचना के विकास के लिए दी जा रही है। बंगलौर विद्युत वितरण प्रोजेक्ट व हैदराबाद महानगर क्षेत्र में विद्युत संचरण सुधारने की योजना प्रमुख है। विशाखापट्टनम बन्दरगाह विस्तार योजना व दिल्ली में तीव्रगति की यातायात व्यवस्था तथा दिल्ली मेट्रो परियोजना के लिए जापान ने धन उपलब्ध कराया है। दिल्ली–मुम्बई औद्योगिक गलियारे का निर्माण भी प्रमुख परियोजना है। जापान इसके लिए तकनीकी व मौद्रिक सहायता उपलब्ध करता रहा है। मुम्बई–दिल्ली औद्योगिक गलियारा टोक्यो – ओसाका क्षेत्र की तरह विकसित किया जायेगा।

जापान की आर्थिक सहायता के पीछे आर्थिक के साथ–साथ राजनीतिक व सामरिक कारण भी महत्वपूर्ण रहे हैं।[6]इस सम्पूर्ण आर्थिक सहायता में जापान ने 95 प्रतिशत येन ऋण के रूप में, 4 प्रतिशत अनुदान के रूप में, 1 प्रतिशत तकनीकी सहायता के रूप में मदद की है। जापान द्वारा यह सहायता गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य व चिकित्सा सेवाओं, ग्रामीण विकास प्राकृतिक आपदा, जनसंख्या नियंत्रण, एड्स की रोकथाम, सिंचाई, बन्दरगाहों, यान्त्रिक शक्ति, पर्यावरण सुरक्षा आदि में विकास के लिए दी गयी है। प्राप्त करने वाले राष्ट्र के मूल्यांकन के बाद किया जायेगा। अब आर्थिक के साथ–साथ सामरिक बाध्यतायें भी निर्णायक होगी। आर्थिक रूप से ढांचागत विकास के साथ–साथ मानवाधिकार, अच्छा शासन, सामाजिक विकास व प्रजातन्त्र आदि भी आर्थिक सहायता प्रदान करने में निर्णायक तत्व रहेंगे। इस कारण भारत व जापान को पूंजी निवेश व आर्थिक सहायता में समन्वय पैदा करना पड़ेगा ताकि दोनों देश इसका भरपूर लाभ उठा सकें।[7] जापानी निवेश दो क्षेत्रों में अधिक रहा – 1. ऑटोमोबाइल्स इण्डस्ट्रीज (निवेश का 60 प्रतिशत) व 2. फॉर्मास्यूटीकल्स (कुल निवेश का 20 प्रतिशत)।

संयुक्त उद्यम

जापान भारत में संयुक्त उद्यम लगाने के पक्ष में है। जापान को भारत में उनके प्लाण्ट को उपद्रवियों द्वारा हिंसा से नष्ट करने का अंदेशा है। जापान मानता है कि भारत में अर्थनीति पर राजनीति प्रभावी है व राजनीतिक मुद्दों के कारण कुछ ना कुछ होता रहता है। जापानी भारत को अशान्त देश मानते हैं। इसके साथ श्रम कानून, कर प्रणाली में त्रुटियां, नौकरशाही की अनुदारवादी विचारधारा, भारत में जातीय आन्दोलन अकुशल श्रमिकों के भरोसे उत्पादन इन्सपेक्टर राज, यातायात के साधनों का अभाव व कारखानों में स्थानीय लोगों द्वारा

दबाव बना कर प्रबन्ध द्वारा अपने पक्ष में फैसले करवाना, भ्रष्टाचार आदि ऐसे अवरोध है जिनके कारण जापान स्वयं अपने बलबूते पर भारत में कोई उद्योग नहीं लगाना चाहता है। भारत में जापान द्वारा संयुक्त उद्यम लगाने की प्रक्रिया 1980 के दशक में आरम्भ हुयी जब जापान में मारूति–सुजुकी व हीरा होण्डा के कारखानें दिल्ली के पास, भारत में लगाये। 1991 के बाद भारत–जापान संयुक्त उद्यमों में तेजी आयी। तब से भारत में निरन्तर रूप से जापानी कम्पनियों की संख्या भारत में बढ़ती जा रही है। मारूति–सुजुकी सहयोग से कई मोटरकार पुर्जे बनाने वाली कम्पनियां जैसे भारत सीटस लि., आशी इण्डिया सेफ्टीग्लास लिमिटेड, सोना स्टीयरिंग सिस्टेम लिमिटेड, नित्पोन डेंसो इंडिया लिमिटेड, जय भारत मारूति लिमिटेड आदि के साथ सहयोग बढ़ा है।[8] बाद में जेवीसी, हिताची, मिस्तुबिसी, टोयटा, सोनी, सेनयो, शार्प, सुजुकी, यामाहा, होण्डा, तोशिबा, निसान, सीमांदजु, सुभीतोयो, फुजोस्तु आदि ने भी कई भारतीय कम्पनियों से समझौते किये। इस बढ़ते सहयोग के कारण यामाहा ने एस्कोर्ट के साथ अपना मोटरसाईकिल का, सोनी ने 100 प्रतिशत धन देकर टी.वी. पिक्चर, ट्यूब का तथा होण्डा ने सिद्धार्थ श्रीराम मोटर गाड़ियों का कारोबार शुरू किया। इसके अतिरिक्त जापान की मित्सुबीसि कॉर्पोरेशन, मित्सुइ कम्पनी व गरूबेन कॉर्पोरेश ने मिलकर हरियाणा सरकार के औद्योगिक विकास कॉर्पोरेशन के साथ मिलकर मानेसर गुड़गांव में एक आदर्श औद्योगिक नगर (एम.आई.टी.) बनाने का काम शुरू किया।[9] इन कार्यक्रमों से केवल दो सरकारों के बीच ही नहीं, बल्कि भारत के व्यापार समूहों (ऐ शोचेम, सी आई आई, फिक्की आदि तथा जापान के प्रमुख व्यापारिक संगठन के बीच भी सहयोग विकसित हुए हैं। जापान की कम्पनियों ने अब भारत में पूर्ण रूप से स्वयं संचालित कम्पनियां भी खोलना शुरू कर दी हैं। जापान की कम्पनियां अब वित्तीय क्षेत्रों में भी आगे आ रही हैं। अभी भी जापानी कम्पनियों के लिए मोटरगाड़ी सहायक क्षेत्र, औद्योगिकी प्लास्टिक, तेल व रसायन क्षेत्र प्रदूषण नियन्त्रण सामान, जहाजरानी निर्माण, गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत, कार्यालयों की मशीनरी आदि में सहयोग के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं। दोनों देशों के बीच पर्यटन के क्षेत्र में भी काफी संभावनाऐं उपलब्ध हैं। सूचना औद्योगिकी क्षेत्रों में भी दोनों एक दूसरे से काफी लाभान्वित हो सकते हैं। दोनों देश इस क्षेत्र में अपने हार्डवेयर (जापान) व सॉफ्टवेयर (भारत) की तकनीकों के संयुक्त विकास से भरपूर लाभ कमा सकते हैं। भारत व जापान के बीच आर्थिक क्षेत्र में मतभेद भी हैं एक दूसरे के बारे में विपरीत सोच अलग–अलग वार्ता के तरीकों सर्वोच्च स्तर पर निर्णय लेने की भिन्न प्रणालियों, ग्राहकों के बारे में अलग अलग दृष्टिकोण, व्यापारिक प्रतिष्ठानों में कार्य करने के विभिन्न तरीके, अलग–अलग कॉरपोरेशन की बाध्यताओं अपनी कर्मचारियों के विकास के बारे में अलग–अलग सोच, औद्योगिक संबंधों, उनके स्तरों व प्रक्रियाओं के बारे में विचार आदि बहुत से कारणों से दोनों के बीच भिन्नता बनी हुयी है। अच्छे संबंधों के लिए इन विभेदों को दूर करना आवश्यक है।

विश्व व्यापार संगठन के लागू होने के बाद निवेश पर सरकारों द्वारा भी प्रति सुरक्षा का आश्वासन दिया जाता है, इससे जापान को स्वयं ही निवेश की सुविधा महसूस हो रही है। अब जापान संयुक्त उद्यम लगाने की प्रवृत्ति से बचने लगा है। जापान की स्वयं द्वारा ही भारत में फैक्ट्री स्थापित कर जापानी मार्का से सामान बेचने पर भारत में आने वाले समय में यदि स्वदेशी का आन्दोलन जोर पकड़ता है तो फैक्ट्री व उत्पाद को नुकसान होने की संभावना हो सकती हैं। इसके साथ ही सारा मुनाफा विदेश में जायेगा, इससे भारत का आर्थिक शोषण भी होगा। जापान भविष्य में संयुक्त उद्यम लगाने की नीति में परिवर्तन करता है तो इसके तो खतरे भी हैं। भारत व जापान कुछ नव विकसित नये क्षेत्रों में भी संयुक्त उद्यम लगा सकते हैं। ये नये क्षेत्र है – बायो टेक्नोलॉजी, नैनो टेक्नोलोजी, सूचना तकनीक, ऑटोमोबाइल्स, एरोस्वस, टैक्सटाइल्स, चमड़ा, समुद्री उत्पाद व कुछ अन्य उद्योग भी है। भारत की बढ़ रही अर्थ व्यवस्था में ऊर्जा की मांग भी बढ़ रही है। ऊर्जा, पर्यावरण व तकनीकी क्षेत्रों में भी संयुक्त उद्यम की अपार संभावनाऐं हैं।

भूकम्प और सुनामी

जापान ने अपार आर्थिक उन्नति की है परन्तु उसकी दो कमजोरियां उसे हमेशा कठिनाईयों में डाल देती है – 1. कच्चे माल का अभाव, 2. जापान का तीव्रता वाले भूकम्प क्षेत्र पर स्थित होना। जापान कच्चे माल का आयात तो पूरे विश्व के देशों से करता रहा है। किसी एक देश से संबंध में कड़वाहट आ जाती है तो दूसरे

देश से कच्चा माल आयात करके अपनी व्यवस्था चला लेता है परन्तु जापान को कच्चे माल के निर्यातक देशों के दबाव में तो रहना पड़ता है। जापान की दूसरी बड़ी कमजोरी उसकी तीव्र भूकम्प के क्षेत्र में होना है। जापान में रियक्टर पैमाने पर 4 या 5 तक तो भूकम्प आते ही रहते हैं। परन्तु भयंकर भूकम्प जापान का विनाश लेकर आते हैं। पहले भी कई बार भूकम्प आये हैं परन्तु 11 मार्च 2011 को रैक्टर पैमाने पर 10 की तीव्रता वाला भूकम्प जापान को हिला गया। जापान का उत्तरीपूर्वी क्षेत्र तो तबाह ही हो गया।

भूकम्प व सुनामी के कारण जानने, पता लगाने वे ऐसी प्राकृतिक आपदाताओं के समय बचाव के उपाय करने में दोनों देशएक दूसरे को भरपूर सहयोग दे सकते हैं। जापान वैज्ञानिक रूप से उन्नत व आर्थिक रूप से विकसित देश है। प्राकृतिक आपदाताओं से निपटने में जापान विश्व मं प्रथम स्थान पर है, ऐसी स्थिति में भारत जापान से भूकम्प व सुनामी दोनों के संबंध में तकनीकी ज्ञान व कार्यरूप में रणनीति प्राप्त कर सकता है। भारत – जापान संबंधों में भूकम्प व सुनामी के बारे में पुर्वानुमान लगाने की तकनीक व सुनामी आते समय बचाव के उपाय करने में, एक दूसरे को अपने पास उपलब्ध ज्ञान का आदान–प्रदान कर लाभान्वित हो सकते हैं।

परमाणु शक्ति

परमाणु शक्ति की उत्पत्ति से ही इस पर विवाद रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सर्वाधिक चर्चित मुद्धा परमाणु शक्ति रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने गुप्त रूप से परमाणु शक्ति की खोज की व 6 तथा 9 अगस्त 1945 को हिरोशिमा व नागासाकी पर इसका परीक्षण किया परमाणु शक्ति यूरेनियम के विखण्डन सिद्धान्त पर आधारित है। विखण्डन की प्रक्रिया में जो ऊर्जा उत्पन्न होती है उसे परमाणु शक्ति कहते हैं।

परमाणु शक्ति के संबंध में भारत व जापान में मौलिक रूप से अन्तर है। भारत ने 1974 से पूर्व तो परीक्षण किया ही नहीं था परन्तु परमाणु शक्ति के शान्तिपूर्ण प्रयोग का समर्थक था। इन्दिरा गांधी, मोरार जी देसाई, चरण सिंह, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी ने परमाणु शक्ति के संबंध में विकल्प खुला रखने व व्यावहारिक नीति अपनाने पर बल दिया। जापान, भारत की परमाणु नीति का विरोधी है व भारत पर सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने पर दबाव डाल रहा है। भारत में भी नरौरा में तीव्र भूकम्प वाले क्षेत्र में परमाणु रियक्टर लगा रखा है। भारत जापान के अनुभव से सीख लेकर परमाणु रियक्टरों की सुरक्षा के उपाय कर सकता है तथा जापानी परमाणु तकनीक से लाभ प्राप्त कर सकता है।

बहुपक्षीय आयाम

भारत–जापान संबंध केवल द्विपक्षीय आयामों से ही निर्धारित नहीं होते, बल्कि बहुत से बहुपक्षीय आयाम की भारत–जापान संबंधों का निर्धारण करते हैं। इन बहुपक्षीय आयामों में मुख्य रूप से निम्नलिखित आयाम शामिल है –

- भारत– जापान संबंधों पर वैश्विक शक्ति अमेरिका का प्रभाव
- भारत – जापान संबंधों पर महाद्वीपीय शक्ति रूस का प्रभाव
- भारत – जापान संबंधों पर पड़ौसी देश चीन का प्रभाव
- भारत – जापान संबंधों पर क्षेत्रीय संगठन आशियान व इसके सदस्य देशों का प्रभाव

भारत–जापान संबंधों पर वैश्विक शक्ति अमेरिका का प्रभाव

1945 से 1952 तक जापान पर अमेरिका का नियन्त्रण रहा। सेन फ्रांसिसको संधि से जापान को उसकी सम्प्रभुता लौटा दी, लेकिन जापान ने अमेरिका को अपने देश में सेना का बेस उपलब्ध कराया अमेरिका ने जापान को आर्थिक उन्नति करने की छूट दी।[10] दो शत्रुओं में मित्रतापूर्ण संबंधो की शुरूआत हुयी, जो मित्रता आज तक जारी है। 1980 के बाद से जापान–अमेरिका में व्यापार युद्ध की शुरूआत हुयी। जापान ने इस समय ही अमेरिका सैनिक छत्री को हटाने की मांग की। 1973 में अमेरिकी तेल कम्पनियों ने अमेरिकी ग्राहकों को ही प्राथमिकता देना तय किया, इससे जापानियों का मन खिन्न हुआ। अमेरिका ने जापान को सोयाबीन की आपूर्ति

कम कर दी, अतः जापान ने अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम कर दी। जापान ने अपने आर्थिक विकास पर ही जोर दिया। 1980 के बाद अमेरिका की एशिया में रूचि जागृत हुयी क्योंकि यह विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार है, 1990 के बाद यह रूचि ओर बढ़ गयी क्योंकि सोवियत संघ का यहां से प्रभाव समाप्त हो गया। जापान की अमेरिका के प्रति स्वामिभक्ति धीरे–धीरे कम हो गयी। 1980 तक जापान की विदेश नीति व भारत के साथ संबंध अमेरिका के दिशा निर्देशों के अनुसार निर्धारित होते थे। 1980 के बाद जापान ने अमेरिका की परवाह करना कम कर दिया है व एशिया के साथ अच्छे संबंध बनाने की नीति पर चल रहा है पहले जापान ऐसा नहीं था। आर्थिक प्रक्रिया में जापान बाजार व व्यापार व्यवस्था को अपनाये हुए हैं परन्तु जापान पश्चिमी देश नहीं हो सकता, वह एशिया का देश ही है व एशिया से घनिष्ठ संबंधां को छोड़ नहीं सकता। जापान के सर्वप्रथम पड़ोसी व नजदीकी देश ही ज्यादा लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। शुरू में वैश्विक अर्थव्यवस्थाऐं क्षेत्रीय संगठनों व पड़ोसियों को नकार रही थी। अमेरिका व ब्रिटेन इसमें सबसे आगे थे, जापान भी इनका अनुगामी था। अब ब्रिटेन, अमेरिका आदि ने तो क्षेत्रीय संगठनों का निर्माण ही कर लिया है, जापान भी किसी क्षेत्रीय संगठन का सदस्य बनना चाहता है, किन्तु जापान के सामने ऐसा करने में बहुत सारी कठिनाईयाँ आ रही है कोई भी क्षेत्रीय संगठन जापान को सदस्य बनाने के लिए तैयार नहीं हैं, ऐसी स्थिति में जापान के पास एशिया के देशों से संबंध बढ़ाने के अलावा ओर कोई रास्ता नहीं है। एशिया में जापान के लिए भारत सर्वाधिक अनुकूल देश पड़ता है।

अमेरिका, जापान का व्यापारिक भागीदार देश तो हैं लेकिन अमेरिका की नीति संरक्षणवाद की नीति है। इस नीति के बाद भी अमेरिका, जापान से आयात होनी वाली वस्तुओं को रोक नहीं पा रहा है, ऐसी स्थिति में अमेरिका, जापान के व्यापार को एशिया व भारत में कैसे रोक सकता है। जापान निर्मित वस्तुओं की मांग अधिकाधिक बढ़ रही है व इनका उत्पादन भी जापान में बढ़ रहा है।[11] 1970 तक जापान, भारत के साथ संबंध अमेरिका की इच्छानुसार संचालित करता था। वर्तमान में अमेरिका भारत के साथ संबंधों को पर्याप्त महत्व दे रहा है, ऐसी स्थिति में जापान अपने हितों व अपने व्यापार के लिए अधिक सोचने लगा है। जापान तो भारत के साथ परमाणु शक्ति के क्षेत्र में शक्ति से पेश आता है जबकि अमेरिका ने भारत के साथ परमाणु संधि की है। इससे जापान का भारत के संबंध में भ्रम दूर हुआ है। इससे जापान भी भारत के साथ संधि करने व अच्छे संबंध बनाने का मौका चूकना नहीं चाहता। अमेरिका एशिया के देशों में सैनिक हस्तक्षेप की नीति अपना रहा है, यह हस्तक्षेप वह स्वयं के बलबूते पर भी नहीं करना चाहता। संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् द्वारा प्रस्ताव पास कर कि, अमेरिका संयुक्त सेनाओं से कार्यवाही करता है इससे सारा खर्चा अमेरिका को वहन नहीं करना पड़ता व वर्चस्व अमेरिका का ही स्थापित होता है। इसे जापान भली प्रकार जान रहा है अतः अब जापान अमेरिका के दबाव में न रहकर स्वतन्त्रतापूर्वक नीतियों का निर्णय कर रहा है। जापान अब अमेरिका की सुरक्षा छत्री के नीचे नहीं रहना चाहता है। अतः जापान एशिया के देशों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रहना चाहता है ताकि जापान की सुरक्षा को कोई खतरा नहीं हो। जापान, भारत से भी सुरक्षा कारणों से मित्रतापूर्ण संबंध चाहता है ताकि भारत भी जापान के पक्ष में समर्थन करें।

भारत–जापान संबंधों में स्वाभाविकता दिखती है, जबकि भारत–अमेरिका संबंधों में बनावटीपन अधिक लगता है। जापान–अमेरिकी संबंधों में अमेरिकी दबाव स्पष्ट झलकता है। जापान व अमेरिका में वहां की जनता का एक दूसरे में अविश्वास बढ़ता जा रहा है।[12]

जापान की विदेश नीति संविधान, राजनीति, व्यापार, निवेश तकनीकी विकास और सहायता अनुदान सभी अमेरिका से निर्धारित होते रहे हैं। अब जापान इनमें परिवर्तन चाहता है। इन परिवर्तनों से ही जापान के भारत के साथ संबंध अधिक प्रगाढ़ हो सकते हैं। अमेरिका अपने स्वार्थों की पूर्ति के अलावा अन्य किसी भी देश का भला नहीं चाहता है।

महाद्वीपीय शक्ति रूस के सन्दर्भ में भारत–जापान संबंधों में नवीन आयाम

सोवियत संघ के विखण्डन के बाद महाशक्ति से रूस महाद्वीपीय शक्ति में बदल गया। रूस की स्थिति में यह बदलाव जापान के लिए लाभदायक रहा है। जापान और रूस पड़ौसी देश होने के कारण इनके भौगोलिक क्षेत्रों पर प्रभुत्व के संबंध में विवाद है। 1800ई. तक जापान विश्व में अलग–अलग था। जापान के किसी देश के साथ कोई संबंध नहीं थे। इसी अवधि में रूप ने कुरीलक्षद्वीप समूहों पर अधिकार कर लिया। रूस की सेनाओं ने इन्हीं दिनों जापान को दबाव में लाने के लिए यहां छापामारी का कार्य भी यिा। 1875 की सेण्ट पीटर्सबर्ग की संधि से कुरीनद्वीपो पर जापान का सखालिन क्षेत्र पर रूस का नियन्त्रण स्वीकार कर लिया गया।[13] 1905 में रूस की जापान से हार व पोर्डस माऊथ संधि से दक्षिणी सखासिन भी जापान को छोड़ दिया। 1945 तक कुरीलद्वीप समूह व दक्षिणी सखालीन जापान के नियन्त्रण में ही रहे।[14] 1945 में सोवियत संघ ने कुरील हेबोमेस, सिकोटन, इटोराफू, कुनासिरी व होकायाडो आदि जापानी क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। जापान इनकी वापसी की मांग करता है। अमेरिका जापान का समर्थन करता है। जापान ने कुनासिरी, डटोराफू, हेबोमेस व सिकोटन को तो रूप से ले लिया तथा उत्तरी कुरील व दक्षिणी सखालिन पर जापान के दावे को रूस ने स्वीकार कर लिया। अब 4 द्वीपों पर दोनों में विवाद हैं जिन पर रूस का नियन्त्रण है तथा जापान उन्हें प्राप्त करना चाहता है। जापान से काकू द्वीप समूहों पर नियन्त्रण के लिए चीन से सहमति चाहता है। रूस इनको अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक मानता है। जापान इन पर नियन्त्रण करके साइबेरिया तक पहुंचना चाहता है और पर्याप्त प्राकृतिक पदार्थ मौजूद है जिनका जापान अपनी औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दोहन चाहता है। साईबेरिया में लौह, कोयला, प्राकृतिक गैस व अन्य कई धातुएं हैं जो जापान के लिए महत्वपूर्ण है।

जापान व रूस दोनों की सीमाऐं खुले समुद्र को छूती है। समुद्र में दोनों देश मछली पकड़ने का कार्य करते है जिनसे दोनों देशों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है व मछलियों का व्यापार भी करते है। रूस से समुद्र में एक काल्पनिक सीमा बुल्गानिंन रेखा खींचकर जापान को समुद्र में मछली पकड़ने के अधिकार को सीमित कर दिया।

जापान 1992 के बाद रूस को बड़ी मात्रा में ऋण दे रहा है। आज जापान रूस में दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। प्रथम बड़ा साझेदार जर्मनी है। रूस की नीति यह है कि जापान एक कमजोर देश रहे ताकि वह रूस से चार द्वीप समूह न मांगे व रूस को किसी प्रकार की चुनौती न दे। रूस चाहता है कि जापान, अमेरिका व भारत से अच्छे संबंध न रखे। यदि जापान को अमेरिका व भारत से मित्रतापूर्ण समर्थन मिल जाता है तो वह कभी भी रूस को खतरा पहुंचा सकता है। जापान, रूस की सर्वोच्चता को स्वीकार नहीं करता है। रूस व जापान दोनों में कभी भी सुलह नहीं हो सकती, क्योंकि दोनों की महत्वाकांक्षाऐं अधिक है, ऐसी स्थिति में रूस के भय से जापान भारत के साथ अधिकमैत्री चाहेगा। जापान–रूस शत्रुता में जापान भारत की उपेक्षा नहीं कर सकता। जापान की रूस के साथ शत्रुता में न तो अमेरिका न ही चीन जापान को इतनी सहायता कर सकता है जितनी भारत सहायता कर सकता है।

सोवियत संघ के विखण्डन के बाद भी रूस को इतना कमजोर नहीं समझना चाहिए। रूस आज पहले से अधिक अपनी सुरक्षा के लिए चिन्तित है। रूस के लोग 1905 में जापान के हाथों पराजय को भूल नहीं सकते। दोनों देशों में ही सैनिकवाद के पनपने की प्रबल संभावनाऐं है अतः दोनों एक दूसरे को व्यापक सहयोग के बावजूद सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। दोनों में एक दूसरे के प्रति गहरा विश्वास नहीं है।

जापान व रूस दोनों महाद्वीपीय शक्तियां, वर्तमान विश्व परिप्रेक्ष्य में भारत से अधिक मित्रतापूर्ण संबंध बनाना चाहती है। भारत अपने अतीत के संबंधों को ध्यान में रखते हुए फूंक–फूंक कर कदम रखने की नीति में विश्वास करता है।

रूस ने जिन चार द्वीप समूहों पर नियन्त्रण कर रखा है उन्हें वह बिलकुल भी नहीं छोड़ना चाहता, रूस में यह भावना उसकी तीव्र राष्ट्रप्रेम का प्रकटीकरण है।[15]

भारत की स्थिति जापान के सन्दर्भ में व्यापारिक संबंध बढ़ाने की है व रूस जैसे देशों से आयात–निर्यात कम होता है जो जापान को भारत द्वारा पूरा व्यापारिक सहयोग करने के लिए तैयार है। राजनीतिक मुद्दों व भौगोलिक क्षेत्र पर नियन्त्रण के संबंध में भारत एकदम जापान के मत का समर्थन नहीं करता है। भारत इन मुद्दों पर गुटनिरपेक्षता, संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थिति व अपनी विदेश नीति के अनुसार निर्णय करने में स्वतन्त्र है। जापान अमेरिका की नीति पर चलता है। जिसका उद्देश्य अमेरिका का विश्वास पात्र बनना हैं।

पड़ोसी देश चीन के सन्दर्भ में भारत–जापान संबंधों में नवीन आयाम

जापान व चीन दोनों ही एशिया के प्रमुख देश हैं। चीन में साम्यवाद के उदय के बाद से वह जापान को सन्देह की दृष्टि से देखने लगा है। शक्तिशाली जापान चीन के लिए नुकसानदायक हैं तथा सैनिक जापान तो चीन को सर्वाधिक खतरा लगता है। जापान पर अमेरिका का हाथ होने से चीन के मन नहीं रहा था। भारत के साथ जापान के संबंध में चीन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। शुरू में बौद्धधर्म भारत से चीन होते हुए जापान पहुचा था। आधुनिक समय में चीन, भारत–जापान संबंधों में बाधक अधिक है व अच्छे संबंधों में रूकावट डालता है। चीन भौगोलिक रूप से एक बड़ा देश है व अब भी साम्यवादी विचारधारा से शासित है।

चीन ने शक्तिशाली जापान को कभी स्वीकार नहीं किया। जापान ने जब भी एशिया महाद्वीप पर छाने की कोशिश की, चीन ने जापान को चुनौती दी है व रोका है। जापान को चीन से किसी प्रकार की उम्मीद नहीं है। द्विपक्षीय संबंधों में जापान चीन से किसी प्रकार की अधिक उम्मीद नहीं करता है।

भारत पर जब चीन ने 1961 में आक्रमण कर दिया था तो जापान ने तटस्थता की नीति अपनायी व आक्रमण देश की आलोचना नहीं की। भारत–चीन युद्ध में अमेरिका, भारत का साथ दे रहा था परन्तु जापान ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। कठिनाई की इस घड़ी में भारत को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में बहुत कम देशों ने साथ दिया। इससे भारत ने भी जापान के साथ अच्छे संबंधों की पहल नहीं की। भारत–पाक युद्ध 1965 व 1971 में चीन–जापान–पाकिस्तान व अमेरिका आदि देश भारत के विरोध में एक हो गये थे।

भारत विचारधाराओं से परे, गुट निरपेक्षता, शान्तिपूर्ण सहमति में विश्वास करने वाला देश है। भारत ने जापान से समान संबंधों की नीति अपनायी है। भारत–जापान संबंधों में कोई बड़ा अवरोध भारत की तरफ से कभी भी पैदा नहीं किया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि जापान, चीन की उपेक्षा करता है जो जापान के लिए सर्वाधिक अनुकूल संबंधों में वृद्धि के लिए भारत श्रेष्ठ हो सकता है।

क्षेत्रीय संगठन आसियान के सन्दर्भ में भारत–जापान संबंधों में नवीन आयाम

आसियान विश्व में प्रथम सशक्त क्षेत्रीय संगठन है जिसकी स्थापना 1967 में 5 देशो इण्डोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, थाईलैण्ड व सिंगापुर ने मिलकर की थी। बाद में ब्रुनेई, विपतनाम (1995), कम्बोडिया (1999), लाओस व म्यांमार को इसमें शामिल करने से इसकी सदस्य संख्या 10 हो गयी हैं। ये दक्षिणी पूर्वी एशिया के प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर देश हैं जो जापान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। विश्व के कुल प्राकृतिक पदार्थों में टीन का 43 प्रतिशत, कोबाल्ट व्यय 13 प्रतिशत, कोयले का 34 प्रतिशत भाग पाया जाता है। मलेशिया व इण्डोनेशिया में तेल व प्राकृतिक गैस पायी जाती है।[16] इन पदार्थों के अलावा अन्य खनिज भी यहां मिलने हैं। जिन पर जापान की नजर थी। इन प्राकृतिक पदार्थों को प्राप्त करने के लिए जापान आशियान का सदस्य बनना चाहता था, लेकिन इन द. पूर्वी एशिया के देशों ने उसे आशियान की सदस्यता नहीं दी।

आसियान देशों में राजनीतिक स्थिरता है इस कारण इन देशों ने पर्याप्त आर्थिक विकास किया है। पूर्वी एशिया में जापान द.कोरिया व हॉग–कांग ने तीव्र आर्थिक विकास किया है। जापान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार आसियान ही है। 1970 के दशक में आसियान देशों ने तीव्र आर्थिक विकास किया है। जापान का आसियान से कच्चा माल सस्ते श्रमिक और पर्याप्त ऊर्जा के स्रोत मिलते हैं जो इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों व कपड़ा उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है आसियान देशों को भी तकनीक तैयार माल इलेक्ट्रॉनिक का सामान आदि महत्वपूर्ण वस्तुऐं मिलती है। जापान आसियान में सर्वाधिक व्यापारिक गतिविधियां होते हुए भी एक दूसरे पर विश्वास नहीं है। शुरू में तो व्यापार का महत्व अधिक नहीं मापा गया था। विकास के साथ आसियान देश

व्यापार के महत्व को जानने लगे है। जब भी इन देशों के व्यापार में आर्थिक असंतुलन पैदा होता है तो उससे अब अधिक चिन्ता प्रकट की जाती है। 2008 में आयी आर्थिक मंदी ने मलेशिया व इण्डोनेशिया में बहुत अव्यवस्था उत्पन्न की व इसके लिए गलत आर्थिक नीति को जिम्मेदार माना गया है। 1970 तक जापानी निवेश भी इन देशों में सर्वाधिक था। बाद में जापानी निवेश धीरे–धीरे कम होने लगा है। आशियान के देश आपस में ही एक दूसरे देश में निवेश कर रहे हैं। आसियान देशों की कर प्रणाली से जापानी आयात–निर्यात व निवेश पर प्रभाव पड़ा है। आशियान देशों की वजह से किया है। जापान ने आशियान देशों के साथ संबंधो को संस्थात्मक रूप देने के लिए जापान आशियान फोर्म का गठन किया है लेकिन इससे भी जापान को अधिक लाभ नहीं हुआ है। जापान की आशियान में अधिक उपस्थिति, जापान के लिए बहुत सारी कठिनाई पैछा कर रही है। इससे जापान का इनके साथ व्यापार असन्तुलन पैदा हो गया है। अब जापानी लोगों से आशियान देशों के लोग चकित रहते हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया के देश यह कहते हैं कि आसियान देशों का सारे अण्डे जापानी बॉस्केट के लिए नहीं है।

जापान का सर्वाधिक प्रिय क्षेत्र द.पूर्वी एशिया था जहां से 1980 के बाद जापान को चुनौतियां मिलना शुरू हो गया। आसियान में भारतीय उपस्थिति 1990 के बाद से बढ़ रही है। 1992 से नरसिंह राव ने पूर्व की ओर देखों की नीति अपनायी। भारत ने द. पूर्वी एशिया के देशों को अधिक महत्व देना शुरू किया है। आसियान में भारत को पर्यवेक्षक का दर्जा दिया है, 2002 से भारत आसियान शिखर वार्ताऐं शुरू हुयी है। 2007 से भारत आसियान मुक्त व्यापार आरम्भ हुआ है इससे भारत का आसियान से अत्यधिक सहयोग बढ़ा है व जापान का महत्व कम हुआ है।

भारत व जापान के अच्छे संबंधों में बाधाऐं

भारत व जापान दोनों एशिया के प्रमुख देश है। ऐतिहासिक रूप से तो दोनों एक से ही रहे हैं। वर्तमान युग में दोनों में भारी अन्तर आ गया है। 1945 से पूर्व जापान सैनिक निरंकुशता का प्रतीक था व निर्दयतापूर्वक शासन कर रहा था तथा विश्व में उसकी छवि दूसरे देशों को सताने वाले राष्ट्र की थी इसके विपरीत भारत उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद से पीड़ित देश था जिसकी सम्प्रभुता पर ब्रिटिश शासन काबिज था। 1945 के बाद जापान की विश्व में परमाणु त्रासदी झेलने वाले व अमेरिकी सर्वोच्चता को स्वीकार करने वाले देश के रूप में हुयी, जबकि भारत का उत्थान स्वतन्त्र व गुटनिरपेक्ष देश के रूप में हुआ। इन विपरीत परिस्थितियों में भी जापान ने आर्थिक विकास किया व आज जापान विश्व की एक प्रमुख आर्थिक शक्ति है भारत जापान के बराबर आर्थिक विकास तो नहीं कर पाया, लेकिन आज विश्व की तीव्र गति से बढ़ने वाली विश्व की दूसरे नम्बर की अर्थव्यवस्था है। जापान ने अमेरिका के राजनीतिक व सैनिक संरक्षण में, अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारने पर ही सर्वाधिक बल दिया है। भारत ने किसी की सर्वोच्चता को स्वीकार नहीं किया व किसी भी गुट में शामिल नहीं हुआ, इससे भारत का आर्थिक विकास तो धीमा रहा परन्तु भारत ने अपने स्वतन्त्र राजनीतिक अस्तित्व की रक्षा की हैं। जापान एशिया का होते हुए भी राजनीतिक रूप से अपने को एशिया का न मानकर विकसित देशों की श्रेणी में मानता है। जापान किसी क्षेत्रीय संगठन में भी शामिल नहीं है। जापान की आर्थिक स्थिति के कारण वह किसी से बंधना नहीं चाहता है, अतः जापान सभी देशों से खुले आर्थिक संबंध रखते हैं जो उसके हितों से अधिक जुड़े है व भौगोलिक तथा भावनात्मक आधारों पर कम आश्रित है। जापानी चेम्बर ऑफ कॉमर्स व इण्डस्ट्री भारत के व्यापारिक परिवेश को कठिन मानती है। बहुत सारे कारणों से जापानी कम्पनियाँ भारत में निवेश के पक्ष में नहीं रहती है। प्रमुख कारण है –

- भूमि अधिग्रहण व उसका प्रयोग
- कर प्रणाली
- आधारभूत संरचना
- वस्तुओं का वितरण
- निवेश में कानूनों में उदारतापूर्वक छुट नहीं होना

- वीजा के लिए आवेदन प्रक्रिया
- अयोग्यता या अदक्षता तथा प्रशासनिक पारदर्शिता का अभाव
- सामाजिक सुरक्षा समझौता
- बौद्धिक सम्पदा अधिकार
- वित्तीय क्षेत्र व स्टील से संबंधित विशेष मुद्दे
- अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार मांग की पूर्ति के लिए एक स्तर बनाये रखना

उपरोक्त समस्याओं का समाधान निकाल कर अधिक से अधिक जापानी निवेशकों को आमंत्रित किया जा सकता है। जापानी निवेशक भारतीय कर प्रणाली को जटिल व समझने में कठिन मानते हैं। भारत में उद्योगों के लिए जमीन अधिग्रहण व पानी की निकासी उसका प्रयोग भी जटिल व अपारदर्शी है। उद्योगों के लिए विद्युत पानी की आपूर्ति व पानी की निकासी आवश्यक है जो भारत में कम है। औद्योगिक पदार्थों की स्थापना भी एक प्रमुख समस्या है। भारत में औद्योगिक पार्कों का अभाव है। जापानी कम्पनियों ने भारत में निवेश के लिए कुछ निर्माण कार्यों को आवश्यक माना है जो अभी नौकरशाही की हठधर्मिता से नहीं हो रहे हे। एक दूसरे की भाषा समझने में भी कठिनाई महसूस होती है। जापानियों को अंग्रेजी भी कम आती है अतः वे बिना दुभाषिये के बात नहीं कर सकते इससे व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डल दूसरे देश में जाने से पहले घबराते हैं। ऐसे वातावरण से दूसरे देश के बारे में समझ नहीं पाते। पिछले 10 वर्षों में कोरियाई कम्पनियों ने भारत में व्यापार कर अपना वर्चस्व स्थापित किया है। उदार आर्थिक व्यवस्था का व्यवहार के प्रभाव दिखने के बाद भी निवेशक आकर्षित हुए हैं। भारत सरकार ने औद्योगिक नीति विभाग में जापान निवेशकों को सुविधा देने के लिए व उन्हें आकर्षित व प्रोत्साहित करने के लिए एक जापानी सेल खोला है। जापान सरकार भी भारत के निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रयासरत है। जापान सरकार भी निवेशकों में विश्वास पैदा करने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य कर रही है।[17]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मूर्ति पी.ए.एन., 'इण्डिया एण्ड जापान : डाइमैंशन ऑफ देयर रिलेसन्स, हिस्टोरिवस एण्ड पॉलिटिकल', (ए.बी.सी. पब्लिशिंग हाऊस, न्यू देहली, 1986), पेज 352
2. मूर्ति पी.एन.एन., 'इण्डिया एण्ड जापान : डाइमैंशन ऑफ देयर रिलेसन्स, हिस्टोरिक्स एण्ड पॉलिटिकल', (ए.बी.सी. पब्लिशिंग हाऊस, न्यू देहली, 1986) पेज 353
3. मूर्ति पी.ए.एन., 'इण्डिया एण्ड जापान : डाइमैंशन ऑफ देयर रिलेसन्स, हिस्टोरियस एण्ड पॉलिटिकल', (ए.बी.सी. पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली, 1986) पेज 354
4. नटराज गीतांजलि, 'इण्डो–जापान इनवेस्टमेण्ट रिलेसंस ट्रेंड एझड प्रॉस्पेक्ट्स' (इण्टरनेट पर लेख), पेज नं. 7
5. नटराज गीतांजलि, 'इण्डो–जापान इनवेस्टमेंट रिलेसंस ट्रेंड एझड प्रॉस्पेक्टस' (इण्टरनेट पर लेख), पेज नं. 10
6. नायडू, जी.बी.सी., 'इण्डो जापान रिलेशंस एन एनालिसिस ऑफ इश्यूज ऑफ कॉमन कनसर्नज', नई दिल्ली, 2001, दिल्ली पेपरबैक्स संख्या 18, पृ. 81
7. यादव आर.एस., 'भारत की विदेश नीति एक विश्लेषण', (किताब महल, इलाहाबाद, 2005), पेज 356
8. शर्मा, आर.बी.एस. रामा व चोपड़ी वी.डी., 'जापान सुपर सैनिक पॉवर' नई दिल्ली, 1998, पेज 205
9. गुप्ता एस.पी., 'इण्डिया जापान इनवेस्टमेण्ट कॉ–ऑपरेशन', पेज 182
10. तनाका ब्रिज, 'फ्यूचर ऑफ यू.एस.ए., जापान रिलेसनशिप', टाइम्स ऑफ इण्डिया 11 दिस. 1991, नई दिल्ली

11. तोकेषी इनगारसी, 'एनीमोसीटी आर ग्रोविगपेनस दा यू.एस. जापान रिलेशनशिप' जापान क्वॉटर ली जन–मार्च 1990, पेज 154

12. तोकेषी इनगारसी, 'एनीमोसीटी आर ग्रोविगपेनस दा यू.एस. जापान रिलेसनशिप', जापान क्वॉटर ली जन–मार्च, 1990, पेज 22

13. लेनसन, जी.ए., 'दॉ रश्यिन पुस टुवर्ड्स जापान' प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रिंसटन, 1959, पेज नं. 501–506

14. लेनसन, जी.ए., 'जापानीज रीकोनीसन टू दा यू.एस.एस.आर., (थाला फेजे, 1970), पेज नं. 177

15. तनाका ब्रिज, 'जापानीज फील विन्डीकेटेड', टाइम्स ऑफ इण्डिया 30 अगस्त, 1991, नई दिल्ली

16. इमरसन के. डोनाल्स, आसियान एज एन इण्टरनेशनल रीजीम, जर्नल ऑफ इण्टरनेशनल अफेयर्स :– 1987–88, पेज नं. 3

17. नटराज गीतांजलि, 'इण्डिया जापान इनवेस्टमेण्ट रिलेसन्स ट्रेण्ड्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स' इण्टरनेट पर लेख (पेज नं. 15)

❖◆❖